आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 13/03/2026; Revised: 18/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

नये और पुराने मूल्यों का द्वंद्व – युगे : युगे क्रांति नाटक के सन्दर्भ में

डॉ. अतुल कुमार पाण्डेय

सह आचार्य

भाषा विभाग (हिंदी)

सेंट क्लारेट महाविद्यालय, स्वायत्तशासी, बैंगलोर

डॉ.अतुल कुमार पाण्डेय, नये और पुराने मूल्यों का द्वंद्व : युगे – युगे क्रांति नाटक के सन्दर्भ में, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक1/मार्च 2026**,(30 -34)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19495903

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सार :युगे युगे क्रांतिविष्णु ' प्रभाकर जी का प्रसिद्द सामाजिक नाटक है जिसमे , उन्होंने समय के सापेक्ष बदलते मूल्य और पुरानी पीढियों को लेकर नए पीढ़ी के बीच अंतर्विरोध को चित्रित किया है। बदलता समय किस प्रकार नयी पीढ़ी की सोंच को बदल देता है चाहे , वह सामाजिक क्षेत्र हो ,सांस्कृतिक क्षेत्र हो या पारिवारिक सिद्धांतो को नयी पीढ़ी पर थोपने की बात हो । हर पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ी से खुश नहीं है और जब यह नाखुशी विद्रोह का रूप लेती है तो क्रांति बन जाती है । समाज हर समय एक सा नहीं रहता और उसे रहना भी नहीं चाहिए क्योकि , परिवर्तन ही समाज का नियम है और यह परिवर्तन ही नए भविष्य की आधारशिला रखता है । इस बात को नाटककार ने इस नाटक में बताने का प्रयास किया है ।

बीज शब्द: अंतर्विरोध प्रतिक्रियावादी ,विधर्मि ,पारंपरिक , सामाजिक , सापेक्ष , नाखुशी ,

प्रस्तावना : परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है । मनुष्यसमाज , संस्कृति और सभ्यता को इसी परिवर्तन से होकर गुजरना पड़ता है । समय– समय पर न जाने कितनी नई परम्पराओं प्रथाओं ,और मान्यताओं का जन्म देश-काल समाज और ,मनुष्य के लिए होता है । समय– समय पर इनमे सुधार की भी आवश्यकता पड़ती है । क्योकिं यह सत्य है कि एक व्यवस्था एक , नियम और एक बनी- बनाई परंपरा कुछ समय बाद दूसरी पीढ़ी के लिए व्यर्थ हो जाती है । इसलिए यह जरुरी है कि समाज के सुनियोजित संचालन और विकास के लिए परिवर्तन आवश्यक है ।' युगे – युगे क्रांति' नाटक इस मान्यता पर खरा उतरता है । इस नाटक का प्रकाशन में 1969 हुआ था । परन्तु1875 ईस्वी से लेकर आजादी के बाद तक के समय में एक ही परिवार के माध्यम से कई पीढियों के बीच अंतर्विरोधों को दिखाया गया है। कैसे पहले युग में क्रांति करने

वाला व्यक्ति दुसरे युग में अपनी नयी पीढ़ी के लिए दकियानूसी और रुढ़िवादी बन जाता है। इस नाटक को पांच भागो में विभाजित कर पीढियों के अंतर्विरोध को दिखाया गया है–

पहली- पीढ़ी ,1875 इस्वी में कल्याण सिंह के द्वारा पर्दा प्रथा के विरोध में क्रांति ,

दूसरी- पीढ़ी1901 , ईस्वी के आस –पास कल्याण सिंह के बेटे प्यारे लाल का विधवा विवाह को लेकर क्रांति और अंतर्विरोध ,

तीसरी- पीढ़ी1920 ,- ईस्वी के 21आस– पास प्यारे लाल की बेटी शारदा का स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने और प्रेम विवाह करने को लेकर क्रांति और परिवार से अंतर्विरोध ,

चौथी- पीढ़ी ईस्वी के ,1942 आस – पास शारदा व विमल के बेटे दुसरे धर्म की लड़की से शादी करने को लेकर क्रांति और अंतर्विरोध ,

पांचवी- पीढ़ी जो अति आधुनिक काल से सम्बन्ध रखता है उसका ,प्रेम और शादी को अलगअलग रूप में-देखने और अलग पैमाने पर परिभाषित करने को लेकर क्रांति,

इस नाटक की पहली कथा 1875 ईस्वी के आस – पास कल्याण सिंह और उनकी पत्नी की कथा है। यह वह समय था जब सामाजिक और पारंपरिक परंपरा के अनुसार पति – पत्नी केवल रात में ही मिल सकते थे। उस समय प्रकाश के लिए दीये की व्यवस्था होती थी। दीये की कम रोशनी की वजह से एक पति अपनी पत्नी का चेहरा नहीं देख पाता था। दिन में पर्दा प्रथा की वजह से पतिपत्नी एक दुसरे के-,सामने नहीं आते थेक्योकि उनके पिता जी नाराज हो जायेंगे और समाज में उनकी इज्जत चली जायेगी। दोनों की इच्छा होने के बावजूद सिर्फ सामाजिक और पारंपरिक रुढियों की वजह से कोई कब तक दूर रहे। जब मन से ऐसे वाक्य निकलते हों – सच"– सच बताना कि तुम्हारा मन नहीं कि मुझे देखो बोलो ? ना जवाब क्यों नहीं देती इसका ?मतलब है कि तुम्हारा भी मन करता है और करना भी चाहिए।[1]"इस बात का जवाब देती हुई उसकी पत्नी रामकली कहती है – करता तो है पर , मन तो बहुत सी ऐसी वैसी बातों को करना चाहता है।वे क्या सभी माननी चाहिए। फिर भी यह सच है कि मेरा मन तुम्हे अच्छी तरह से देखने को करता है।[2]" दोनों एक दुसरे का चेहरा देखते है और पिताजी के हाथो कल्याण सिंह की पिटाई हो जाती है। पास– पड़ोस और रिश्तेदारों में भले ही कल्याण सिंह की आलोचना होती है पर , उसने पर्दा प्रथा के खिलाफ एक क्रांति की शुरुवात कर दी और समाज को खोखला करने वाले इस प्रथा का विरोध कर एक क्रांति को जन्म दिया।

दूसरी क्रांति और अंतर्विरोध तब दिखाई देता है जब इसी कल्याण सिंह का बेटा प्यारेलाल एक विधवा से विवाह की बात करता है ।यह बात जब पिता को पता चलती है तो वह बहुत नाराज होता है और अपने पुत्र के विचारो से परेशान भी होता है। प्यारेलाल विधवा विवाह को जायज ठहराते हुए दलील देता है किपुरुष" को जब एक से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौन सा अपराध किया है। पुरुष एक स्त्री के जीते– जी दूसरी स्त्री ला सकता है,लेकिन नारी भरी जवानी में और जवानी में ही क्यों बचपन , में ही पति के मर जाने पर दुसरू शादी नहीं कर सकती। उसने पति को आँख उठाकर देखा तक नहीं। छोटी से नादान उम्र में ही वह विधवा हो गयी।वह यह भी नहीं जानती कि जिंदगी किस चिड़ियाँ का नाम है ।विधर्मियों..... और विदेशियों ने हमारी इन्ही कुरीतियों से लाभ उठाया है ।ये ताकतवर हुए और हम कमजोर। हमारी जाति में दुराचार फैला है। लेकिन अब हम यह अत्याचार नहीं होने देंगे।हमने निश्चय कर लिया है। [3]"वही उसका पिता जिसने अपने समय क्रांति की थी, अब वह अपने बेटे के कार्य पर अपनी प्रतिक्रिया देता है और बेटे के द्वारा लिए गए फैसले से सहमत नहीं होता। वह कहता है ठीक " – क्या है और क्या नहींयह , मैं जानता हूँ ।तेरे लिए क्या सही है और क्या गलत इसका फैसला

करने का हक़ से मुझे है। इस खानदान की इज्जत किसमें है और किस बात में नहीं है इसको , तेरे माँ – बाप तुझसे कहीं अच्छी तरह से जानते हैं। तू मेरा बेटा है। बिना मेरी इजाजत तुझे कुछ भी करने का हक़ नहीं । [4]"जो कल्याण सिंह जो अपने युग में क्रांतिकारी रहातथा , एक पुरानी रूढि को ख़त्म करने के लिए आवाज उठाईवह , अपने पुत्र के हाथ – पाँव तोड़ने की धमकी देता है ।बात न मानने पर पिता उसे घर से निकाल देता है पुत्र , को खुद के लिए मरा हुआ तक घोषित कर देता है । पर प्यारेलाल भी अपनी बात पर अडा रहता है और अंततः समय के साथ एक बार फिर बदलाव दिखाई देता है।

कालचक्र का पहिया घुमते – घमते एक बार फिर नयी क्रांति को जन्म देने की ओर अग्रसर होता है । इस बार समय बीस साल आगे जाता है और प्यारेलाल की लड़की शारदा क्रांति का सृजन करती है । जो समाज उस समय स्त्रियों को घर से बाहर निकालने की और अन्तर्जातीय विवाह को पूरी तरह से प्रतिबंधित मानता है उसी समाज में रहने वाले पिता की लड़की पिता परिवार , और समाज के बनाये नियमो तोड़कर नए युग की शुरुवात करना चाहती हैं। जिस प्यारेलाल खुद अपने परिवार से विद्रोह किया था ,वह खुद अपनी लड़की के एक कदम उठाने पर क्रोधित हो जाता है और अपनी पुत्री से कहता है कि क्रांति मैंने भी की थी लेकिन क्रांति का अर्थ यह नहीं कि कुल, समाज और धर्म की लाज को घोल कर पी लिया जाय । [5] "जब उसे विमल से शादी की बात पता चलती है तो वह अपनी बेटी का गला घोंट देने की बात कहता है । क्योकि विमल उसकी जाति का नहीं है और उससे शारदा की शादी नहीं हो सकती । [6] " लेकिन यह सच है कि क्रांति कुल- मर्यादाओ की बाट नहीं जोहती। वह तो इन सबके बन्धनों को तोड़ कर आगे बढती है। वही शारदा ने भी किया । वह भी कहती है किमैं" आत्महत्या कर लुंगी पर उस दमघोटू वातावरण में नहीं जाउंगी।[6] " इसी घटना को लेकर इस नाटक का सूत्रधार कहता है कि प्यारेलाल प्रतिक्रियावादी हो गया था और वह अब उम्र और अनुभवों से स्थिति को देखने की कोशिश कर रहा था। लेकिन अनुभव और क्रांति दोनों एक दुसरे के विपरीत हैं। दोनों की सदा अनबन होती रहती है है। अगर' अनुभव स्थापित सत्यो की रक्षा करता है क्रांति नए सत्यो की खोज करती है।'

समय फिर आगे बढ़ता है और पहिया घुमते हुए जहाँ , में आ जाता है 1942विमल और शारदा का बेटा प्रदीप बिना मातापिता - को बताये एक इसाई लड़की से कोर्ट में शादी कर लेता है। यह वही विमल था जिसने जातीयता और प्रांतीयता की दीवारे तोड़कर घर से बाहर आने– जाने वाली लड़की शारदा से आगे बढकर विवाह किया पर आज वह अपने बेटे के किये गए कार्यो से परेशान और व्यथित है। पर प्रदीप अब इन बातो को पुरातनपंथी और दकियानुसी मानता है। जिस शारदा ने बड़े ही कड़े शब्दों में अपने पिता को जवाब दिया था । वह आज कहती है किहमने " भी नए युग का स्वागत किया है। लेकिन तुम क्या जानो कि हर बात की एक सीमा होती है। फिर परिवार और समाज की बात है उनको साथ लेकर चलने से ही बदलाव किया जा सकता है । जबकि यह सच है कि बदलाव के लिए इन्ही परिवारों और समाजो के नियम तोड़ने पड़ते हैं। [7] " शारदा और विमल का बेटा प्रदीप जेनेट का नाम की इसाई लड़की से शादी करता है और माता – पिता जेनेट का नाम बदल कर जान्हवी रखना चाहते हैं। लेकिन प्रदीप इसका विरोध कहता है तो माता – पिता उसे अपने जायजाद से अलग करने की धमकी देते हैं और बाद में यह भी कहते हैं कि मेरा बेटा मर गया।

समय कुछ बीस साल आगे बढ़ता है जिस प्रदीप ने अपने परिवार के खिलाफ जाकर अंतर्जातीय विवाह किया था उसी , का पुत्र और बेटी दोनों एकदम अलग सोच रखने वाले हैं। प्रदीप की बेटी अन्विता है जो प्रेम तो किसी और से करती है पर जब शादी की बात आती है तो वह किसी और को चुन लेती है। प्रदीप की पत्नी जेनेट भी अब इस बात को स्वीकार नहीं कर पाती कि बेटेबेटियों , को शादी जैसे

रिश्ते में स्वतंत्रता देनी चाहिए। इस बारे में अपने बेटे से पुछती है तो वह भी कहता है कितो" क्या हुआ , कलदीपक से प्यार करती थी आज नेल्सन से करती है।असल बात प्यार करने की है व्यक्ति , तो कोई भी हो सकता है।[8] " उसका बेटा अनिरुद्ध तो सारी मर्यादाए ही लांघकर बाते करता है। वह हर दिन अपनी नयी संगिनी से अपने पिता को मिलवाता है। विवाह में वह बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता है। अनिरुद्ध के अनुसार प्रेम' मुक्ति में है बंधन में नहीं।विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा हैइसलिए , बंधन है। वीणा .डॉ' गौतम लिखती हैं किविष्णु" प्रभाकर रचित युगे- युगे क्रांति का प्यारेलाल बाल– विधवा से विवाह कर मध्यवर्ग की विधवा नारियों के लिए रास्ता खोलने का प्रयास करता है।प्रदीप जातिभेद की दीवार को धराशायी कर तमाम विरोध और बाधाओं के बावजूद एक इसाई लड़की से विवाह कर समाज के सामने अपने समय की जटिल परिस्थितियों में मध्यवर्गीय युवकों के लिए एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करता है।धर्म और जाति मनुष्य द्वारा निर्मित ऐसे बंधन हैं जिन्हें स्वेच्छापूर्वक वह कभी भी तोड़कर मुक्त हो सकते हैं। अनिरुद्ध के लिए स्वच्छंद प्रेम अधिक श्रेयस्कर है। नारी पुरुष संबंधो के लिए वह विवाह संस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। विवाह की अनिवार्य नियति में उसे न आस्था है और न ही वह उसे अंततः आवश्यक मानता है।इन सब पीढ़ीगत पात्रों के चारित्रिक विश्लेषण द्वारा नाटककार ने मध्यवर्गीय समाज में नित्य उठनेवाली प्रश्नानुकुल समस्याओं की ओर मध्यवर्गीय बुद्धजीवी वर्ग की चेतना का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है।[9]"

निष्कर्ष: विष्णु प्रभाकर का नाटक 'युगे – युगे क्रांति 'यह बताता है कि नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच जो संघर्ष है वह शाश्वत है।आज की विद्रोही पीढ़ी कल की सनातन पीढ़ी बन जाती है।इसी व्यापक संघर्ष को दिखाने के लिए विष्णु प्रभाकर जी ने इस नाटक का निर्माण किया है। प्रभाकर जी ने यहाँ इस सत्य को बताने का प्रयास किया है कि जो व्यक्ति जीवन की युवावस्था में क्रांतिकारी होता है वह , बुढ़ापे में रुढ़िवादी और परम्परावादी बन जाता है और नयी पीढ़ी का विरोध करता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में साहित्य समाज का दर्पण हैसमाज , का प्रतिबिम्ब है समाज , का मार्गदर्शक है तथा समाज का लेखाजोखा है। किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उअके साहित्य से प्राप्त होती है। साथ ही साहित्य समाज और देश में आये बदलाव को भी इंगित करता है। जो पूर्णत :सत्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. युगे– युगे क्रांति – विष्णु प्रभाकर पृष्ट ,संख्या- 16राजपाल , प्रकाशन -1988
2. वही पृष्ट ,संख्या- 17
3. वही पृष्ट ,संख्या- 17
4. वही पृष्ट ,संख्या 23 –
5. वही पृष्ट ,संख्या - 24
6. वही पृष्ट ,संख्या - 44
7. वही पृष्ट ,संख्या - 44
8. वही पृष्ट ,संख्या- 70
9.आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतनाशोध) डॉ वीणा गौतम - गंगा (

****